HINDI LITERATURE

First Paper (आधुनिक काव्य)

Time Allowed : Three Hours | Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये: 10×3

(क) दुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत को ज्वालाओं का मूल
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।

अथवा

अस्ताचल ढले रवि,
शशि–छवि विभावरी में
चित्रित हुई है देख
यामिनीगन्धा जगी,
एकटक चकोर–कोर दर्शन–प्रिय,
आशाओं–भरी मौन भाषा बहु भावमयी
घेर रहा चन्द्र को चाव से,
शिशिर–भार–व्याकुल कुल
खुले फूल झुके हुए,
आया कलियों में मधुर
मद–उर–यौवन–उभार
जागो फिर एक बार।

http://questionpaperresult.com

Scanned by CamScanner

(ख) पूर्व युग–सा आज का जीवन नहीं लाचार,
आ चुका है दूर द्वापर से बहुत संसार
यह समय विज्ञान का, सब भाँति पूर्ण, समर्थ,
खुले गये हैं गूढ़ संसृति के अमित गुरू अर्थ।
चीरता तम को, सँभाले बुद्धि की पतवार,
आ गया है ज्योति की नव भूमि में संसार।

अथवा

फिर भी तुम्हें याद नहीं आया, नहीं आया,
तम तुमको मेरे इन जावक–रचित पाँवों ने
केवल यह स्मरण करा दिया कि मैं तुम्हीं में हूँ
तुम्हारे ही रेशे–रेश में सोयी हुई–
और अब समय आ गया कि
मैं तुम्हारी नस–नस में पंख पसारकर उड़ूँगी
और तुम्हारी डाल–डाल में गुच्छे–गुच्छे लाल–लाल कलियाँ बन खिलूँगी।

(ग) शान्त, स्निग्ध,ज्योत्सना उज्जवल।
अपलक अनन्त नीरव भूतल।
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी–गंगा, ग्रीष्म विरल
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल।
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि मुख से दीपित मृदु करतल
लहरें उर पर कोमल कुन्तल।
गोरे अंगों पर सिहर–सिहर, लहराता तार तरल सुन्दर,
चंचल अंचल–सा नीलाम्बर।

अथवा

मोह क्या निशि के वरों का,
शलभ के झुलसे परों का
साथ अक्षय ज्वाल का
तू ले चला अनमोल सम्बल।
पथ न भूले, एक पग भी,
घर न खोये, लघु विहग भी,
स्निग्ध लौ की तूलिका से
आँक सबकी छाँह उज्जवल।

2. 'इन्द्र का गर्वहरण' शीर्षक कविता के आधार पर श्रीकृष्ण की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। (शब्द–सीमा : 500 शब्द) अंक 16

3. सिद्ध कीजिये कि छायावादी कवियों में निराला छायावाद के सच्चे प्रतिनिधि कवि हैं। (शब्द सीमा : 500 शब्द) अंक 16

अथवा

रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित कुरूक्षेत्र (षष्ठ सर्ग) की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजये। (शब्द सीमा : 500 शब्द) अंक 16

http://questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

4. "धर्मवीर भारती प्रेम व सौन्दर्य के ही कवि नहीं है वे यथार्थ और मानवता के बोध से भी युक्त हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिये।(शब्द सीमा:500 शब्द)अंक 16

अथवा

भारतेन्दु युगीन साहित्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

(शब्द सीमा : 500 शब्द) अंक 16

5. 'छायावाद' की विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये। 12

अथवा

दीर्घ कविता के अर्थ व स्वरूप को स्पष्ट करते हुए प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। 12

6. रस के भेद बताते हुए उसके स्थायी भाव और विभावादि का परिचय दीजिए। 5+5

अथवा

रस निष्पत्ति का आशय स्पष्ट करते हुए उससे सम्बन्धित मतों का उल्लेख कीजिए। 5+5

http://questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner